विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून, 1912 को मीरपुर, जिला-मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनका बचपन हिसार, हरियाणा में गुजरा। विष्णु जी को लिखने की प्रेरणा उनकी मां से मिली। एक बार उन्होंने मां से पूछा कि यह किताबें कौन लिखता है। क्या मैं भी ऐसा लिख सकता हूं। मां ने जबाव देते हुए कहा कि हां जरूर तुम भी लिख सकते हों, जिन्होंने यह किताबें लिखी हैं वह भी तो हमारी तरह साधारण लोग हैं। तब से उनके मन में किताब लिखने की प्रेरणा उत्पन्न हुई।

विष्णु प्रभाकर को अपने घुमक्कड़पन के लिए याद किया जाता है। आवारा मसीहा (शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की प्रमाणिक जीवनी) के रचयिता विष्णु प्रभाकर मनोरंजक एवं तथ्यपरक सामग्री जुटाने के लिए दिल्ली ही नहीं बर्मा और बांग्लादेश भी गये थे। विष्णु जी को बच्चों से बहुत प्यार था । वे इन्हें राष्ट्र की रीढ़ कहकर पुकारते थे। उन्होंने बच्चों के लिए विपुल साहित्य की रचना की ।

देश-विदेश के अनेक सम्मान पुरस्कारों से उन्हें विभूषित किया गया। आवारा मसीहा के लिए पाब्लो नेरूदा सम्मान (इंडियन राइटर्स एसोसिएशन) और सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार, अंतरराष्ट्रीय मानव पुरस्कार, राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, सूर पुरस्कार (हरियाणा साहित्य अकादमी), तुलसी पुरस्कार (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान) आदि पुरस्कार प्राप्त हुए।

इनकी प्रमुख रचनाएं हैं- दर्पण का व्यक्ति, जिंदगी के थपेड़े, सफर के साथी, मेरी तैंतीस कहानियां, मेरी इक्यावन कहानियां, नवप्रभात, युगे-युगे क्रांति, गांधार की भिक्षुणी, अशोक तथा अन्य एकांकी, ऊंचा पर्वत गहरा सागर, मोटे लाला, कुंती के बेटे, रामू की होली, दादा की कचहरी आदि।